वर्ष ५, अंक - ८, जनवरी २०२५

आओ बातें करें

मानव भारती स्कूल देहरादून की पहल

- आदित्य थपलियाल, ९ ब

हिंदी ओलंपियाड

अक्टूबर माह 2024 में अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड में विद्यालय स्तर में छह छात्रों ने प्रथम स्थान स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तीन छात्रों ने द्वितीय स्थान रजत पदक प्राप्त किया।

प्रथम स्थान स्वर्ण पदक प्राप्त छात्र-छात्राएं

१. काव्या, कक्षा 3
२. धैर्य कुमार, कक्षा 4
३. नंदिनी, कक्षा 7
४. श्रेया सेनवाल, कक्षा 8
५. वंश बहुगुणा, कक्षा 9
६. आलोक शेखर भट्ट, कक्षा 10

द्वितीय स्थान रजत पदक प्राप्त छात्र- छात्राएं

१. अरात्रिका बिष्ट, कक्षा 2
२. यशरब, कक्षा 9
३. रविंद्र, कक्षा 10

कक्षा 1 से लेकर 10 तक के छात्र- छात्राओं ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया सभी छात्र- छात्राओं को प्रशस्ति पत्र प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता के द्वारा प्रदान किया गया।

नवंबर माह 2024 में अंतर विद्यालय हिंदी वाद- विवाद प्रतियोगिता में स्प्रिंग हिल्स स्कूल में कक्षा नौवीं की छात्रा साक्षी धानू ने तृतीय स्थान व कात्यायनी भट्ट नवी ने भाग लिया । ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता द्वारा प्रदान किया गया।

अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस

अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस 10 जनवरी को मनाया जाता है। अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस का मुख्य कारण हिंदी को दुनिया भर में बढ़ावा देना और इसके प्रति जागरूकता फैलाना है।

हिंदी दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत की राजभाषा है और दुनिया भर में करोड़ों लोग इसे बोलते हैं।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी दिवस का इतिहास 1975 में शुरू हुआ जब पहली बार विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन का मुख्य करण हिंदी को दुनिया भर में प्रोत्साहित करना और इसके महत्व को बढ़ावा देना था। हिंदी में विश्व की सबसे बड़ी साहित्यिक धरोहर है हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा हिंदी दिवस पर विभिन्न पुरस्कार और सम्मान भी दिए जाते हैं। जो हिंदी साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिए जाते हैं। इसलिए हम सभी मिलकर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए काम करें और हिंदी भाषा को दुनिया भर में प्रचारित करें।

निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत नहीं हिय को सूल।

- इवन्या कश्यप, 9 अ

26 जनवरी: गणतंत्र दिवस का महत्त्व

भारत में हर वर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में बड़े उत्साह और गर्व के साथ मनाया जाता है। यह दिन भारतीय संविधान के लागू होने और भारत को एक गणराज्य घोषित किए जाने की स्मृति में मनाया जाता है। यह न केवल हमारे देश की स्वतंत्रता का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और हमारे संविधान की उत्कृष्टता का उत्सव भी है।

गणतंत्र दिवस का इतिहास : 15 अगस्त 1947 को भारत ने ब्रिटिश शासन से आजादी प्राप्त की, लेकिन उस समय देश का कोई स्थायी संविधान नहीं था। भारत सरकार 1935 का अधिनियम ही लागू था। 29 अगस्त 1947 को डॉ. भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा का गठन किया गया। लगभग 2 साल, 11 महीने और 18 दिन की कड़ी मेहनत के बाद 26 नवंबर 1949 को संविधान तैयार हुआ।
26 जनवरी 1950 को यह संविधान लागू हुआ और भारत एक संप्रभुत्व, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य बना। 26 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) की घोषणा की थी।

गणतंत्र दिवस समारोह : गणतंत्र दिवस पर पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। नई दिल्ली में राजपथ पर आयोजित होने वाली परेड इसका मुख्य आकर्षण है। इस परेड में भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना की शक्ति और संस्कृति का भव्य प्रदर्शन होता है। विभिन्न राज्यों की झांकियां, लोक नृत्य, और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां इस परेड की शोभा बढ़ाते हैं।
राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है और 21 तोपों की सलामी दी जाती है। इसके साथ ही वीरता पुरस्कार, जैसे कि परमवीर चक्र और अशोक चक्र, वीर सैनिकों और नागरिकों को प्रदान किए जाते हैं।

गणतंत्र दिवस का महत्व : गणतंत्र दिवस हमें हमारे अधिकारों और कर्तव्यों की याद दिलाता है। यह दिन हमें यह भी प्रेरित करता है कि हम अपने संविधान के आदर्शों का पालन करें और देश के प्रति अपने दायित्व को निभाएं। यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक है, जो सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधता है।

निष्कर्ष : 26 जनवरी का दिन हर भारतीय के लिए गर्व और सम्मान का प्रतीक है। यह दिन न केवल हमारे स्वतंत्रता संग्राम की महान गाथा की याद दिलाता है, बल्कि हमारे संविधान के महत्व को भी उजागर करता है। हमें चाहिए कि इस दिन को मनाने के साथ-साथ उन आदर्शों को भी अपने जीवन में उतारें, जो हमारे संविधान में निहित हैं।

- कृष्णा मंदीप नेगी, १० ब

आज़ादी

यह आजादी जो हमें मिली है।
इसके लिए आबादी जो मिटी है।
इसके लिए चमड़िया जो छिली है।
इसके लिए लाशे जो बिछी हैं।
सम्मान करो इसका
यह आजादी जो मिली है।
झंडा जो लहराया है
सम्मान जो दिलाया है ।
युद्ध जो रुकवाया है
अंग्रेजों को जो भगाया है
परिश्रम जो कर दिखाया है
सम्मान करो उस झंडे का
जो हमने एक होकर लहराया है ।
ना भूलो उनको जिन्होंने आजादी के लिए
जिस्म अपना मिटाया है।

- जयवर्धन, 8 अ

बच्चों की कलम से

फूल

लाल ,पीले ,नीले ,गुलाबी
चारों ओर फूल ही फूल।
लाल वाले गुलाब पीले वाले गेदे।
नीले वाले जैस्मिन और मेरा मन पसंदीदा
गुलाबी वाला गुलाब।
फूलों का बगीचा सबसे प्यारा।
इसमें मधुमक्खियों का झुंड सबसे न्यारा।
माली देता पानी।
बच्चे करते फूल तोड़कर शैतानी।
लाल ,पीले, नीले ,गुलाबी।
चारों ओर फूल ही फूल।

- आरुशि मेहर, 8 अ

बगिया में लहराए फूल ।
मंद हवा संग रह रहे हैं झूल।
दिन भर खिले रहे रंग-बिरंगे ।
उठ रही अब मन में तरंगे ।
खुशबू से बगिया महाकाय ।
जिससे भंवरे आसपास हैं आए।
मीठे-मीठे गाने गाकर ।
हमको उनके पास बुलाए ।
मन करता है तोड़ उन्हें टोकरी में रख लूं।
प्यारी सी माला बनाकर जगन्नाथ को चढ़ाऊ।
पानी देकर मैं उनकी प्यास बुझाऊँ। माली के
संग और नए पेड़ लगाऊं।

- एकता प्रसाद पाल, 8 अ

बचपन

बचपन था बहुत सुहाना।
खेलकूद था काम हमारा।
पढ़ना लिखना काम ना हमारा।
बचपन था बहुत सुहाना।
खाना खिलाना मां का काम।
हम तो करते थे बस आराम।
मां की गोद में सोने का काम हमारा।
बचपन था बहुत सुहाना।

- ऋषिता कंबोज, 8 अ

बचपन में क्या दिन थे
चॉकलेट टॉफी खाते थे,
खिलौने वाले की घंटी जब बजती थी
तो भागे भागे आते थे ।
विद्यालय भी रोते-रोते जाते थे।
पर मस्ती कर आते थे ।
मां का हाथ न छोड़ने थे।
पर नानी को प्यार करते थे।
गर्मी की जब छुट्टी पड़े तो
नानी के कर भागते थे।
नानी के घर खूब मजे करते थे।
नानी को मनाके घूमने चले जाते थे।
वापस घर आने का मन नहीं करता था।
मम्मी को भी मनाना पड़ता था।
अब जब बड़ा हो गया तो याद करता हूं
वह बचपन के मजेदार दिन ।
जब मस्ती करना ना छोड़ता था।

- अमान्या कौशल, 8 अ

मां

सबसे प्यारी है मेरी मां
सबसे न्यारी है मेरी मां ।
रखती सबका ध्यान है ।
बसती उसमें सब की जान है।
झूला में झुलाती है ।
बच्चों को हंसाती है।
मेरी मां सबसे प्यारी ।

- अनिया राणा, 8 अ

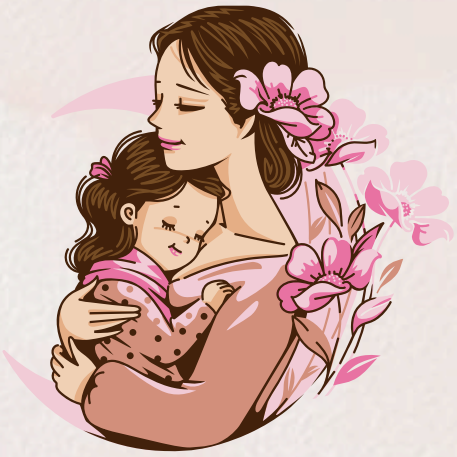

माँ में बसती सबकी जान
उनके बिना जीवन वीरान।
इनसे चलता घर का भार।
इसलिए तो है मां घर की शान।
कपड़े दिलाना मां की ममता ।
जो करें इसकी परवाह उनका जीवन है बढ़ता।
खाने पीने का ध्यान रखती है वह।
बिना कुछ कहे सब करती है वह।
कहने को तो सबकी माँ है ।
लेकिन उनसे पूछो जिनकी माँ नहीं ।
जो करता माँ की कदर
वह रहता हमेशा अमर।

- सुहानी भंडारी, 8 अ,

पेड़

पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ ।
हरियाली के लिए पेड़ लगाओ ।
पेड़ देते हैं हमें फल दवाई आदि।
लेकिन हम मनुष्य करते हैं पेड़ों की बर्बादी।
एक दिन ऐसा आएगा जब सब पेड़ खत्म हो जाएंगे।
सारे मनुष्य पेड़ को काटने से घबराएंगे।
पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ।
हरियाली के लिए पेड़ लगाओ ।

- अंशिका मिश्रा, 8 अ

पेड़ देते हैं हमें फल।
वही है हमारा कल। पेड़ है हरे भरे।
मिट्टी से रहते हैं अड़े।
पेड़ लगाओ जीवन पाओ।
हरा भरा जीवन बनाओ।
पेड़ देते हमें फल ।
फायदा देते हैं साल भर।
पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ।
जिंदगी खुशहाल बनाओ।

- आयुष वर्मा, 8 अ

पेड़

पेड़ों से मिलती है छांव।
पेड़ों से मिलते हैं फूल ।
पेड़ों से मिलते हैं फल ।
पेड़ों से मिलते हैं वन।
पेड़ों से मिलता है जीवन।
पेड़ों से लगता है मन।

- अभिनव ममगई, 8 अ

बचपन

बचपन में मैं छोटा था प्यारा था। सबका दुलारा था।
बहुत बदमाशी करता था ।
फिर भी मुझे कोई कुछ ना बोलता था।
क्योंकि मैं एक बच्चा था।
जब भी मैं रोता था तो सब का प्यार मुझे मिलता था।
फिर भी कुछ ज्यादा समझ नहीं पाता था।
जो भी मुझे चाहिए वह मुझे मिल जाता था ।
क्योंकि मैं एक बच्चा था।

- दिव्या चौहान, 8 अ

सुभाष चंद्र बोस

हमारी राह भले ही भयानक और पथरीली हो हमारी यात्रा चाहे कितनी भी कष्टदायक हो फिर भी हमें आगे बढ़ना ही है । सफलता का दिन दूर हो सकता है पर उसका आना अनिवार्य है सुभाष चंद्र बोस एक महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे।

जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था उनका जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था । बोस के पिता जानकी नाथ बोस एक प्रसिद्ध वकील थे और मां प्रभावती देवी एक धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्ता थी ।

बोस को बचपन से ही राष्ट्रवादी विचारों की प्रेरणा मिली थी और उन्होंने अपने जीवन काल में भारत की स्वतंत्रता के लिए अनेक संघर्ष किए। बोस ने अपनी शिक्षा कटक और कोलकाता में प्राप्त की और बाद में उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने अपनी राजनीतिक जीवन की शुरुआत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में की जो एक सैन्य बल था जिसने भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी। बोस की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइवान में हुई थी लेकिन उनकी मृत्यु के बारे में अभी भी विवाद है उनकी विरासत आज भी भारत में जीवित है और उन्हें एक महान स्वतंत्रता सेनानी के रूप में याद किया जाता है।

- साक्षी धानू, 9 ब

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि नाटककार और उपन्यासकार थे। उनका जन्म 30 जनवरी 1889 को वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ था।

उनके पिता का नाम बाबू देवी प्रसाद था जो एक समृद्ध तंबाकू व्यापारी थे। बाल्यावस्था में उनके माता-पिता का निधन हो गया जिससे उनका बचपन संघर्षपूर्ण रहा जयशंकर प्रसाद ने औपचारिक शिक्षा अधिक नहीं ली लेकिन स्वाध्याय के माध्यम से संस्कृत हिंदी ,उर्दू और अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त की वे साहित्य, इतिहास दर्शन और संस्कृत के गहन अध्यता थे।

वह हिंदी साहित्य में छायावाद के जनक माने जाते हैं। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति इतिहास और मानवतावादी दृष्टिकोण का अद्भुत संगम देखने को मिलता है उनकी प्रमुख कृतियां कामायनी, झरना ,आंसू चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, स्कंद गुप्त तितली, छाया आदि जैसी कई अद्भुत कविता नाटक, उपन्यास ,कहानी आदि पेश की है। जयशंकर प्रसाद जी का निधन 15 नवंबर 1937 मे हुआ। उनका संपूर्ण जीवन साहित्य और संस्कृति को समर्पित था।

- अवन्तिका, 9 ब

राष्ट्रीय बालिका दिवस

लड़कियां बहुत ताकतवर और अनमोल होती हैं वे माँ हो या राजनेता या समाज सभी में योगदान करती हैं। लड़कियां अपनी जिम्मेदारी को बहुत अच्छे से समझती है एक लड़की परिवार को आगे बढ़ाती है और उसमें ख़ुशी और प्यार भरती है ।वह कभी लड़कों से पीछे नहीं होती वह हमेशा उनके समान महत्वपूर्ण होती हैं।

वर्तमान समय में भी लड़कियों को अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता है उन्हें शिक्षा ,बाहर निकलना और नौकरी करना अन्य आवश्यक चीजों के लिए समान अवसर नहीं मिल पाते हैं ।अभी भी इनको बदलने की बहुत जरूरत है ।आज के युग में लड़कियां बहुत आगे हैं वह समाज में अपनी एक अलग पहचान बना रही कोई भी क्षेत्र हो हर जगह लड़कियां लड़कों के कदम से कदम मिला रही हैं।

उनको अनदेखा करना अब मुश्किल है ।शिक्षा वैसे तो सभी के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन बालिकाएं इस क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है शिक्षा मात्र सिर्फ पढ़ने और लिखने के बारे में नहीं होती बल्कि बालिकाओं को सामाजिक रूप से और सामाजिक बधाओ को अपने ज्ञान से दूर करने के लिए कौशल और आत्मविश्वास से पूर्ण करने के लिए भी है एक शिक्षित महिला या बालिका राष्ट्र में सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। लेकिन यह सच है की लड़कियों में क्षमता होने के बावजूद उनका जीवन में अक्सर बाधाओ का सामना करना पड़ता है।

राष्ट्रीय बालिका दिवस हर साल 24 जनवरी को मनाया जाता है इस दिन को मनाने की शुरुआत भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने की थी इसका मकसद समाज में बालिकाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लड़का लड़की में कोई भेदभाव न करना है।

- आकांशा, 9 अ

फ़ोटोग्राफी एक कला

फ़ोटोग्राफ़ी सिर्फ़ पलों को कैद करने से कहीं ज़्यादा है; यह एक कला है जो कहानियाँ सुनाती है, भावनाओं को जगाती है और यादों को संजोती है। एक क्लिक से, एक फ़ोटोग्राफ़र समय को स्थिर कर सकता है, एक पल के सार को हमेशा के लिए कैद कर सकता है।

प्रकाश, रचना और विषय सभी एक साथ मिलकर एक दृश्य कथा बनाते हैं जो संस्कृतियों और सीमाओं के पार लोगों को प्रेरित, शिक्षित और जोड़ सकती है। फ़ोटोग्राफ़ी में इतिहास को दर्ज़ करने, सामाजिक मुद्दों को उजागर करने और सुंदरता को उसके सभी रूपों में दिखाने की शक्ति है। मानवीय भावना को प्रकट करने वाले चित्रों से लेकर प्रकृति की भव्यता को दर्शाने वाले परिदृश्यों तक, फ़ोटोग्राफ़ी में भावनाओं को जगाने और कल्पना को जगाने की क्षमता है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसके लिए धैर्य, रचनात्मकता और विस्तार पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है, लेकिन इसके परिणाम प्रयास के लायक होते हैं। एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में, फ़ोटोग्राफ़ी में शब्दों से परे जाकर सीधे दिल से बात करने की क्षमता होती है। चाहे वह क्षणभंगुर क्षण हो या स्थायी विरासत, फ़ोटोग्राफ़ी में जीवन के सार को कैद करने की शक्ति होती है।

- प्रांजल गुप्ता, १२ विज्ञान

लोहड़ी

लोहड़ी उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध त्यौहार है। यह मकर संक्रांति के एक दिन पहले मनाया जाता है मकर संक्रांति की पूर्व संध्या पर इस त्यौहार का उल्लास रहता है ।
आमतौर पर इस पर्व में रात्रि में किसी खुले स्थान में परिवार एवं आस- पड़ोस के लोग मिलकर आग के किनारे घेरा बनाकर बैठते हैं। तथा इस समय रेवड़ी, मूंगफली, लावाआदि खाकर पर्व मनाते हैं।
उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में खिचड़ी और दक्षिण भारत में पोंगल भी जो लोहड़ी के समीप ही मनाए जाते हैं।
लोहड़ी का त्योहार पंजाबियों तथा हरियाणवी लोगों द्वारा मनाया जाता है।
यह लोहड़ी का त्योहार पंजाब हरियाणा ,दिल्ली ,जम्मू -कश्मीर और हिमाचल में धूमधाम तथा हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यह त्यौहार 13 जनवरी को मनाया जाता है कई लोगों का मानना है कि यह त्यौहार जाड़े की ऋतु के आने का प्रतीक है। आधुनिक समय मे अब लोहड़ी का त्योहार सिर्फ पंजाब, हरियाणा, दिल्ली ,जम्मू कश्मीर और हिमाचल में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है।

- जसवींन कौर, 9 ब

माघ बिहू

बिहू असम में मनाए जाने वाला एक मुख्य त्यौहार है। यह त्यौहार भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है और असम के लोगों द्वारा इसे उत्साह के साथ मनाया जाता है। बिहू वास्तव में तीन त्योहारों की एक श्रृंखला है – अप्रैल में रोंगाली बिहू या बोहाग बिहू, अक्टूबर में कोंगाली बिहू या कटि बिहू, और जनवरी में भोगाली बिहू या माघ बिहू। यह एकता और सांस्कृतिक गौरव की भावना को बढ़ावा देता है। यह कृषि जीवनशैली को भी दर्शाता है। यह असम के ग्रामीण इलाकों में जीवन के आनंद, नवीनीकरण और उत्सव का समय होता है।

पोंगल दक्षिणी भारत में मनाया जाने वाला एक फसल उत्सव है। यह उत्सव जनवरी के मध्य में चार दिनों तक चलता है। यह उत्सव मुख्य रूप से चावल और गन्ने की खेती से जुड़ा हुआ है। तमिल शब्द 'पोंगु' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "उबालना" या "फूलना", यह हिंदुओं द्वारा मनाया जाता है। इस अनुष्ठान में सूर्य देव को मीठे उबले चावल चढ़ाना शामिल है। उत्सव चावल आधारित व्यंजन तैयार करने पर केंद्रित है, एक विशेष मौके के साथ जब पके हुए चावल, गुड़, दाल और दूध का मिश्रण पोंगल बर्तन से गिरता है। मिट्टी के बर्तन पर यह प्रतीकात्मक प्रवाह परिवार के लिए स्वास्थ्य और धन के आशीर्वाद का प्रतीक माना जाता है। पोंगल परंपरा, कृतज्ञता और समृद्धि का एक आनंदमय मिश्रण है। मकर संक्रांति सुनकर मन में सबसे पहले जो दो ख्याल आते हैं, उनमें एक तो आसमान पर उड़ने वाले रंग-बिरंगे पतंग हैं और दूसरे तिल के मीठे लड्डू हैं। वैसे मकर संक्रांति की तारीख 14 जनवरी तय है। कभी-कभार 13 या 15 जनवरी को भी यह मनाया जाता है। यह सूर्य की उपासना का पर्व है, क्योंकि इसी दिन सूर्य उत्तरायण होते हैं। दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह भगवान सूर्य की उपासना का दिन है। इस दिन लोग पवित्र नदियों में स्नान, दान और सूर्य देव की आराधना करते हैं।: मकर संक्रांति को सरल शब्दों में समझें तो यह दो शब्दों से मिलकर बना है। मकर और संक्रांति। मकर का अर्थ मकर राशि से है और संक्रांति का अर्थ होता है परिवर्तन। यानी जब सूर्य मकर राशि में परिवर्तन होता है, तब उसे मकर संक्रांति के रूप में जाना जाता है।

- आर्या नंदिनी पांडे, 9 अ

स्वामी विवेकानंद

भारत के महान आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद कि 12 जनवरी को जयंती है स्वामी विवेकानंद को करोड़ों युवा अपना आदर्श मानते हैं। उनके जोशीले विचारों से प्रेरणा मिलती है यही वजह है कि 12 जनवरी उनके जन्मदिन को देश में राष्ट्रीय युवा दिवस के तौर पर मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा दिवस का मकसद स्वामी जी के संदेशों को फिर से जागृत करना और प्रोत्साहित करना है। आध्यात्मिक गुरु एवं पश्चिम देश में योग वेदांत और भारतीय दर्शन को पहुंचाने वाले स्वामी विवेकानंद जयंती को भारत सरकार हर साल बड़े स्तर पर मनाती है। स्वामी जी जिस नाम की बदौलत से पूरे विश्व में जाने जाते हैं। वह राजस्थान के खेतड़ी के राजा अजीत सिंह की देन है। उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था । विवेकानंद की कुछ ऐसी मुख्य बातें हैं जो हमारी जिंदगी को बदल कर रख सकती हैं यदि आप अपने जीवन में परिवर्तन देखना चाहते हैं तो आपको कुछ बातों का खास ख्याल रखना चाहिए ।

इस लेख में हम स्वामी विवेकानंद की ओर से बताई गई चार बातों को बताने वाले हैं आपको सबसे पहले खुद पर विश्वास रखना चाहिए अगर आप अपने पर विश्वास रखते हैं तो आप जीवन में कुछ भी कर सकते हैं स्वामी विवेकानंद का कहना है कि ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं ऐसे में हम खुद से मुलाकात करते हैं कि और बाद में पछतावा करते हैं। आपको खुद पर हमेशा विश्वास करना चाहिए सच्चाई से जीवन बिताए स्वामी विवेकानंद का कहना है की सच्चाई के साथ ही जीवन जीना चाहिए ऐसा करने से आप अपने जीवन में खुश रह सकते है जीवन में कामयाब होने में भी आपको मदद करेगा कुछ भी हो आपको ईमानदार रहना चाहिए मेहनत करना सीखे। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि आपको मेहनत करते रहना चाहिए ऐसा करने से आपको बिना किसी दिक्कत के आसानी से सफलता मिल जाएगी।
आपको एक समय में एक काम करना चाहिए आप उस काम को ईमानदारी के साथ करना चाहिए ऐसे में चाहे उस काम को करने में जितनी मेहनत लग जाए वैसे करने से आपको सफलता आसानी से प्राप्त होगी।

- कात्यानी, 9 ब

नव वर्ष: एक नई शुरुआत

नव वर्ष हर व्यक्ति के जीवन में एक विशेष महत्व रखता है। यह न केवल कैलेंडर में एक नई तारीख का आगमन है, बल्कि यह एक नई शुरुआत, नई उम्मीदें और नए संकल्पों का प्रतीक भी है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में नव वर्ष को कई प्रकार से मनाया जाता है।

नव वर्ष का महत्व : नव वर्ष एक ऐसा अवसर है जब हम बीते हुए साल की समीक्षा करते हैं। यह हमें अपने अनुभवों से सीखने, गलतियों को सुधारने और नए लक्ष्य निर्धारित करने का अवसर प्रदान करता है। यह समय हमें यह याद दिलाता है कि हर नई सुबह एक नया मौका लेकर आती है। भारत में नव वर्ष का स्वागत विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के अनुसार किया जाता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 1 जनवरी को मनाया जाने वाला नया साल पश्चिमी प्रभाव का हिस्सा है।

विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तिथियों को नया साल मनाया जाता है, जैसे गुड़ी पड़वा (महाराष्ट्र), विषु (केरल), पोंगल (तमिलनाडु) और बैसाखी (पंजाब)।

नव वर्ष 2025: उम्मीदों और अवसरों का नया सवेरा

नव वर्ष 2025 की शुरुआत नई आशाओं, नई उम्मीदों और नए संकल्पों के साथ हो रही है। हर साल की तरह, यह साल भी हमें अपने जीवन को बेहतर बनाने, अपने लक्ष्यों को पाने और अपने सपनों को साकार करने का मौका देता है।

2025 का स्वागत : नव वर्ष 2025 का स्वागत पूरे विश्व में हर्षोल्लास और उत्साह के साथ किया जा रहा है। लोग नये साल की पूर्व संध्या पर विभिन्न आयोजनों में भाग लेते हैं, जहां नृत्य, संगीत और आतिशबाजी का आयोजन होता है। यह समय परिवार और दोस्तों के साथ जश्न मनाने का भी है।

इस वर्ष का आरंभ केवल व्यक्तिगत उत्सव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज और विश्व के लिए भी नई चुनौतियों और अवसरों का प्रतीक है। 2025 में विज्ञान, तकनीक, पर्यावरण और समाज में महत्वपूर्ण बदलावों की उम्मीद की जा रही है।

नव वर्ष 2025 के संकल्प : हर व्यक्ति नए साल पर संकल्प लेता है ताकि वह अपने जीवन को अधिक अनुशासित और सकारात्मक बना सके।

2025 में लोग निम्नलिखित संकल्प ले सकते हैं :

- स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना: नियमित व्यायाम और संतुलित आहार को अपनाना।
- प्रकृति का संरक्षण: पर्यावरण की रक्षा के लिए छोटे-छोटे कदम उठाना, जैसे प्लास्टिक का कम उपयोग करना।
- समय का सदुपयोग: समय प्रबंधन की आदत डालना और तकनीक का सही उपयोग करना।
- रिश्तों को मजबूत बनाना: परिवार और दोस्तों के साथ अधिक समय बिताना।

2025 की संभावनाएं : 2025 न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक रूप से भी एक महत्वपूर्ण साल हो सकता है। इस साल:

तकनीकी विकास नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में बड़े सुधार हो सकते हैं।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के लिए नए कदम उठाए जा सकते हैं।

नव वर्ष 2025 का संदेश : नव वर्ष हमें यह संदेश देता है कि हर दिन एक नई शुरुआत हो सकती है। 2025 में हमें अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाने के साथ-साथ समाज और पर्यावरण के लिए भी योगदान देना होगा।

आइए, 2025 को एक बेहतर साल बनाने के लिए एकजुट हों। अपने जीवन को खुशहाल बनाने के साथ-साथ दूसरों की मदद करने और समाज में बदलाव लाने का प्रयास करें।

नव वर्ष 2025 की हार्दिक शुभकामनाएं!

यह साल आपके लिए सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए।

- कृष्णा मंदीप नेगी, १० ब

संविधान का करो सम्मान

भारत भूमि पर जन्म लिया हमने,
संविधान ने हमें अधिकार दिया।
लोकतंत्र की राह पर चलकर,
हर नागरिक को सम्मान मिला।

स्वस्थ वसुंधरा, हर दिल में देश,
गणतंत्र दिवस का ये पर्व है विशेष।
संविधान के पन्नों में लिखी गई,
हमारी एकता, हमारी पहचान है सही।

ध्वज को लहराते हुए, गर्व से हम कहते,
भारत हमारा है, यह संकल्प हमें समझाते।
सभी जाति-धर्म को एक में बांधकर,
हर भारतीय को एक हो, हम यही सिखाते।

गणतंत्र दिवस की ये बधाई है सबको,
आओ! सब मिलकर इसे मनाएं हम जो।
देश प्रेम में रचा हुआ दिल,
जन जन अब आपस में हिलमिल।
समानता का शिक्षा विस्तार हुआ
कौशल से आय का बढ़ता आधार.
जय हिन्द, जय भारत!

- अंशुल ध्यानी १०ब

मानव भारती इंडिया इंटरनेशनल स्कूल
डी- ब्लाक, नेहरू कॉलोनी, देहरादून, पिन- 248001 उत्तराखंड
ईमेल:- hr@mbs.ac.in, वेबसाइट:- www.mbs.ac.in
फोन- 0135-2669306, 8171465265

आत्मानं विद्धि
संपादक - डॉ. बबिता गुप्ता, डिजाइन - विशाल लोधा